जल संरक्षणः कथनी और करनी

अनिल कुमार लोहानी
वैज्ञानिक ई-I,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

'जल प्रकृति का वरदान है। यह अपने विभिन्न रूपों में पृथ्वी पर बहुतायत में उपलब्ध है। तो फिर जल के विषय में इतनी चिन्ता क्यों? पृथ्वी पर इतना जल होने के बावजूद बहुत से शहर जल की कमी का सामना कर रहे हैं। और जल की कमी वाले शहरों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।' रेडियो में यह वार्ता चल रही थी और मैं वाशबेशिन के सामने ब्रश करता हुआ यह सुन रहा था।

ब्रश करके मैं अखबार पढ़ने बैठ गया। पत्नी टक-टकी लगाये मेरे कार्यकलापों को देख रही थी। मुझे कुछ अजीब सा लगा किन्तु सामान्य होकर चाय की चुस्किया लेता हुआ अखबार में डूबा गया। कुछ समय अखबार पढ़ने के बाद वाशबेशिन के सामने खड़े होकर दाढ़ी बनाने लगा। पत्नी ने आवाज देकर पूछा कि अखबार मे पढ़ा कि दिल्ली के कई क्षेत्रों में पीने का पानी टैंकरों से पहुँचाया जा रहा है। मैंने नल में रेजर धोते हुए जबाब दिया यह सब अत्याधिक जनसंख्या और जल का समुचित उपयोग न करने के कारण हो रहा है। अभी मैं नल पर खड़ा ब्रश धोते हुए जल के समुचित उपयोग के विभिन्न तरीके पत्नी को बता ही रहा था कि मैंने देखा कि मेरी बातों को नेताओं या धर्म गुरूओं का सा भाषण समझ पत्नी रसोई में रहीम दास का चिर परिचित दोहा 'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून' गुन गुनाते हुए मेरे लिये नाश्ता बनाने लगी। इतनी ज्ञान वर्धक बातों की ऐसी उपेक्षा मुझे बर्दाश्त नहीं हुई। होती भी कैसे, मैं कोई नेता या धर्मगुरू तो हूँ नही जिन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग उनकी बातों को ध्यान से सुन रहे हैं या नहीं उनका उद्देश्य तो कुछ और ही होता है। भारतीय समाज का मिथक कि पति परमेश्वर हैं दिमाग मे आते ही लगा कि यह तो शायद हमारी तौहीन है कि पत्नी ने ज्ञान की इन बातों को हवा मे उड़ा दिया। अब तो मन ही मन यह लगा कि देश में पेय जल की कमी का मुख्य कारण पत्नी द्वारा ज्ञान की इन बातों को न सुनना ही है । पूरे देश की जल समस्या का यही एक कारण सोच मैं चुपचाप नहा धोकर तथा नाश्ता कर कुछ जरूरी कार्य बता एक घंटा पहले ही ऑफिस जाने लगा। अभी घर से कदम बाहर निकालता ही कि पत्नी ने प्यार से एक लिफाफा हाथ में देते हुए कहा कि समय मिले तो इसे पढ़ लेना ।

अपने कमरे में आकर बैठा और सबसे पहले पत्नी द्वारा दिया हुआ पत्र खोला और पढ़ने लगा। पत्र का शीर्षक था 'जल संरक्षण कथनी और करनी' पत्र पढ़ते हुए लगा कि ज्ञान होना, तथा ज्ञान की बातें करना इससे अधिक महत्वपूर्ण है उन बातों का स्वंय पालन करना। पत्र में लिखा था 'ब्रश करते समय जो आपने नल चला रखा था उससे शायद 9 से 10 लीटर स्वच्छ जल आपने नाली में बहा दिया इसी तरह दाढ़ी बनाने में जो आपने नल खुला छोड़ रखा था उससे लगभग 12 लीटर स्वच्छ जल बर्बाद कर दिया। जबकि इन दोनों कार्यों को किसी बर्तन मे जल लेकर कुल 2 लीटर जल के प्रयोग से पूर्ण किया जा सकता है। एक व्यक्ति को एक दिन मे 10 लीटर स्वच्छ जल खाना पकाने तथा पीने के लिये तथा 40 लीटर जल नहाने-धोने तथा दैनिक कार्यो के लिये आवश्यक है। जरा सोचिये और बताइये कि कितना स्वच्छ जल समाज के शिक्षित वर्ग में सम्मिलित हम लोग यूँ ही प्रतिदिन व्यर्थ बर्बाद कर रहे हैं। देश के न जाने कितने भागों मे एक बाल्टी

जल के लिये लोगों को कितनी-कितनी दूरी तय करनी पड़ती है। और कुछ भागों में तो एक बाल्टी जल के लिये अच्छी खासी कीमत चुकानी पड़ती है। उधर दूसरी ओर हम लोग जिन्हें समुचित जल मिन्युसपिल्टी या अन्य स्रोतों से प्राप्त हो रहा है जल का दुरूपयोग करने में होड़ सी मचा रहे हैं। इसका ज्वलन्त उदाहरण बाथ टब तथा टॉयलेट फ्लशिगं सिस्टम के रूप में देखा जा सकता है। स्नान करने के लिये बाल्टी का प्रयोग करने से 18 से 36 लीटर जल का उपयोग होता है। जबकि बाथ टब के लिये 90 से 100 लीटर जल की आवश्यकता होती है। इसी तरह पुरानी पद्धति के फ्लशिंग सिस्टम 10 लीटर जल का एक बार में उपयोग करते हैं। इसी प्रकार जाने-अनजाने हम लोग कितना ही स्वच्छ जल बर्बाद कर देते हैं। जरा निम्न तालिका पर नजर डालें तो वस्तु स्थिति का सही ज्ञान होगा।

कार्य	प्रचलित विधि	जल प्रयोग ली. में	वैकल्पिक विधि	जल प्रयोग ली. में
ब्रश करना	चलता नल	10	1 मग	1
दाढ़ी बनाना	चलता नल	12	1 मग	1
फ्लश	प्रचलित	10	नवीनतम(कम आयतन वाले)	4
नहाना	टब	100 से 200	बाल्टी भरकर	18-36
कपड़े धोना	चलता नल	100 से अधिक	बाल्टी भरकर	50-60
कार धोना	पाइप से	50-100	पोंछकर	10
कमरा धोना	पाइप से	50-100	पोंछना	10-15

तालिका-2 जल संरक्षण ऐसे करें

1. घर में लगे पौधों को जरूरत के अनुसार ही जल दें।
2. पेड़ पौधों की सिंचाई के लिये नवीनतम ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करें।
3. सब्जियों को बर्तन में रख कर धोयें और इस जल का प्रयोग सिंचाई में करें।
4. नवीनतम टॉयलेट फ्लशिंग सिस्टम का प्रयोग करें जो कि मात्र 4-5 ली. जल का प्रयोग करता है।
5. टॉयलेट को टिशुपेपर या सिगरेट फ्लश करने के लिये प्रयोग न करें।
6. वाशिंग मशीन को पूरी क्षमता के साथ प्रयोग करें तथा यदि संभव हो तो मशीन में जल की मात्रा को नियन्त्रित करें।
इस सब के अतिरिक्त :-
1. सामाजिक स्थलों पर खुले हुए नलों को बन्द करें।
2. टूटे हुए तथा रिसते हुए नलों की सूचना संम्बन्धित कार्यालयों मे दें।
3. लोगों में जल के समुचित प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करें।
4. जल जागरूकता स्वयं से परिवार की ओर बढ़ते हुए समाज में ले जायें।

पत्र पढ़ते-पढ़ते मैं आत्म मंथन करने लगा कि सचमुच किसी विषय को जानना, उस पर भाषण तथा प्रवचन देने से कहीं अधिक आवश्यक है उसे स्वयं की जिदंगी में अमली जामा पहनाना। लेकिन यदि तालिका 2 के अनुरूप थोड़ा सा प्रयत्न किया जाय तो स्वच्छ जल का दुरूपयोग बहुत कुछ रोका जा सकता है। बस थोड़ी सी इच्छा शक्ति और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।